# हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणालियाँ–कुछ फिल्मी गीतों से गुज़रते हुए मेरे अनुभव के साथ

**पी. जयशंकर**

भूतपूर्व निदेशक, भा कृ अनु प-सी आइ एफ ए एवं प्रधान वैज्ञानिक,

भा कृ अनु प- केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचीन, केरल

"जीवन में हमारे साथ होने वाली सबसे अच्छी चीजें आश्चर्य और सुंदरता का संयोजन है।" लुडविग वॉन बीथोवन (1770-1827) (जर्मन संगीतकार)

दिशि दिशि जननम् यदृच्छया हृदयरंजकम् गानम् च वदनम् नृत्यम् तद देशित्यभिध्यते

(संगीत, जिसे अलग-अलग समय और स्थानों के विशेषज्ञों द्वारा आम जनता की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए धुनों के साथ तैयार किया गया था, जिससे उन्हें मानसिक शांति और संतोष मिल सके, इसे देशी संगीत कहा जाता है) (मातंगमुनि, 7वीं सदी; अपनी बृहद्देशी रचना में)।

## भूमिका

वेद इस ब्रह्माण्ड के सबसे पुराने आलेख हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्पत्ति साम वेद / ऋग्वेद से हुई है, जिसमें संगीत के रूप में गाये जाने वाले भजन सम्मिलित हैं। वैदिक मंत्रों से स्वरों का जन्म होने के कारण इसे आध्यात्मिक संगीत माना जाता है। ऋषियों और मुनियों द्वारा लिखे गए पवित्र ग्रन्थों का तात्पर्य यह था कि शास्त्रीय संगीत केवल ब्राह्मणों द्वारा पढ़ाया जाना था, फिर भी, अन्य संस्कृतियों के प्रभाव से शास्त्रीय संगीत में विभिन्न परिवर्तन हुए। संगीत और आध्यात्मिकता अविभाज्य हैं।

## भारतीय शास्त्रीय संगीत और इसका विभाजन

भारतीय संगीत कला और संस्कृति का हिस्सा है जिसमें समृद्ध विरासत है। 13वीं सदी से पहले भारत में केवल एक संगीत प्रणाली थी। 13वीं सदी के बाद शास्त्रीय संगीत नीचे दिए गए विवरण के अनुसार दो अलग शैलियों में विभाजित किया गया:

विभाजन का कारण यह था कि उत्तर भारत में मध्य एशिया, पश्चिम एशिया और बाद में यूरोपीय लोगों के आक्रमणों की एक श्रृंखला थी, उनकी संस्कृति ने इसके विकास की प्रक्रिया में हिंदुस्तानी संगीत को प्रभावित किया। लेकिन दक्षिण भारत बहुत प्रभावित नहीं हुआ था, क्योंकि आक्रमणकारी यहाँ अधिक घुस नहीं सकते थे। फारसी और मुगल अपने साथ कई कलाकार, संगीतकार और वाद्य उपकरण लाए थे। उनके प्रभाव के कारण हिंदुस्तानी संगीत में धीरे-धीरे गायन और वाद्य संगीत जैसे खयाल, कव्वाली, तराना, ठुमरी, दादरा आदि और वाद्य, सितार, तबला, सारंगी आदि में कई नई शैली विकसित हुई। अमीर खुसरो, सुल्तान हुसैन शार्ख, नियामत खान ('सदरंग', 'अदारंग') आदि जैसे कई संगीतकारों ने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में बहुत योगदान दिया। बाद में 19वीं सदी में पंडित वी.एन. भातखंडे और पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर ने संगीत में प्रणालियों को लाने के लिए किताबें लिखकर, संगीत

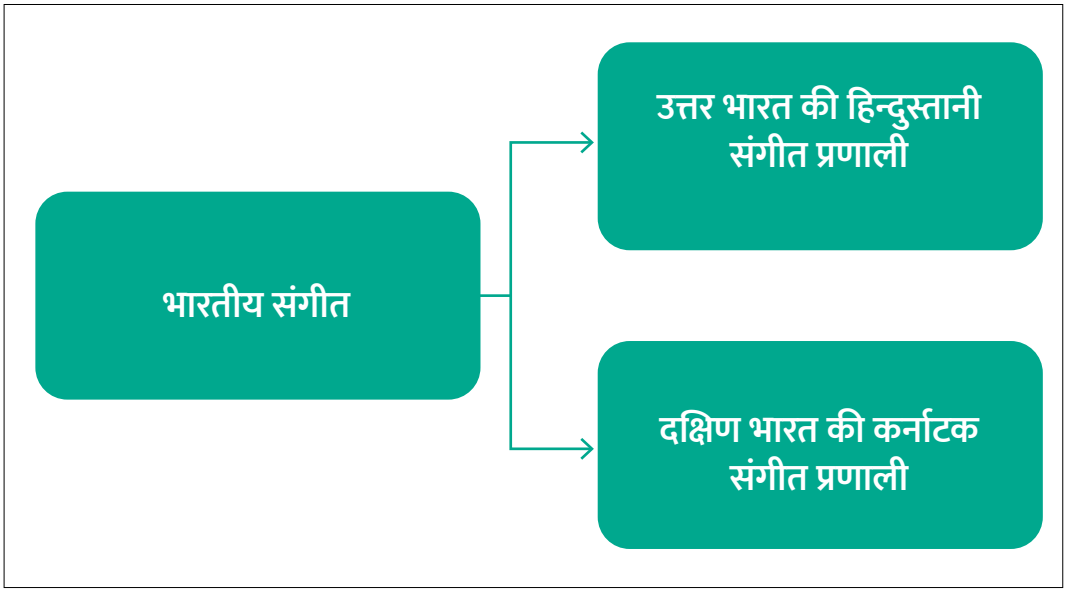


विद्यालय की स्थापना और संगोष्ठियों एवं चर्चाओं का आयोजन करते हुए हिन्दुस्तानी संगीत के विकास में अहम योगदान दिया।

दूसरी ओर, कर्नाटक संगीत मुख्य रूप से श्याम शास्त्री, त्यागराजा, मुत्तुस्वामि दीक्षितर और संत पुरंदरदास द्वारा विकसित किया गया। वर्तमान में, अधिकांश शास्त्रीय प्रशिक्षण इन महान संत संगीतकारों द्वारा रचित कृतियों के चारों ओर घूमते हैं। भारतीय संगीत का इतिहास संगीतज्ञ भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र से व्युत्पन्न माना जा सकता है। नाट्यशास्त्र संगीत, नृत्य और नाटक के मूल सिद्धांत से संबंधित है जिसे "नाट्य शास्त्र" कहा जाता है। इसके अंतर्गत एक ओक्टेव (octave) में 22 नोट थे। व्यक्तियों को संगीतकारों की सहजता के आधार पर उपयुक्त 'मूल' स्वरमान (root pitch) का चयन करने की अनुमति के लिए 'श्रुति' की परिकल्पना की गयी है। 'रस' और 'भाव' या अभिव्यक्तयों के एक संग्रह को मान्यता दी गयी थी।

## दो संगीत प्रणालियों की तुलना

हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणालियों की मुख्य समानताएं और भिन्नताएं संक्षिप्त रूप में नीचे दिया जाता है:

### समानताएं

1. शैलीगत भिन्नताएं होने पर भी कर्नाटक और हिन्दुस्तानी दोनों की बुनियाद के रूप में स्वर, राग और ताल के मूल तत्व समान हैं।

2. हिन्दुस्तानी संगीत की उत्पत्ति वैदिक काल में हुई, जबकि कर्नाटक संगीत की उत्पत्ति भक्ति आंदोलन के दौरान हुई। इस प्रकार दोनों का धर्म से बड़ा संबंध है।

3. प्राचीन हिन्दु परंपराओं से विकसित भारत के शास्त्रीय संगीत के दो मुख्य उप-शैलियों में से एक है कर्नाटक संगीत, दूसरी उप-शैली हिन्दुस्तानी संगीत है, जो उत्तर भारत में फारसी और इस्लामी प्रभावों के कारण एक विशिष्ट रूप में उभरा।

4. दोनों संगीत वैदिक परंपराओं के माध्यम से संस्कृत भाषा की लिपियों के साथ विकसित हुए।

5. इन दोनों प्रणालियों में केंद्रीय भाव एक मधुर विधा या राग है, जो एक लयबद्ध चक्र या ताल द्वारा समर्थित है।

6. हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत प्रणालियों में कई राग ऐसे हैं, जिन्हें अलग-अलग नामों से

जाना जाता है, लेकिन अभिव्यक्ति में समान हैं, जैसे भूपाली-मोहनम, बिलावल-शंकराभरणम, खमाज़-कमास, पीलू-कापी, भीमपलास-आभेरी, चेनजोटी-चेनचुरुटी, जोग-बाह दरी आदि।

### भिन्नताएं

1. हिन्दुस्तानी संगीत का उद्भव कर्नाटक संगीत से पहले हुआ। यह वैदिक मंत्रों, इस्लामिक परंपराओं और पारसी मुसीख-ए-असिल शैली से सम्मिलित है। इसकी तुलना में कर्नाटक संगीत शुद्ध है, जो 15-16वीं सदी में भक्ति आंदोलन के दौरान विकसित हुआ और 19-20वीं सदी में इसकी प्रगति हुई।

2. हिन्दुस्तानी संगीत का व्यवहार मुख्य रूप से उत्तर भारत में और कर्नाटक संगीत का व्यवहार दक्षिण भारत में होता है।

3. कर्नाटक संगीत में मुख्य ज़ोर मौखिक संगीत पर है और अधिकांश संगीत संयोजनों को गाया जाता है, मुख्यत: गायकी शैली में। हिन्दुस्तानी संगीत में मुखर-केन्द्रित ग्रुप की आवश्यकता है। गायक के साथ गायन की शोभा बढ़ाने के लिए कई संगीत उपकरणों को भी रूपकल्पित किया गया है।

4. हिन्दुस्तानी संगीत में 'उप पक्कवाद्यम' की अवधारणा मौजूद नहीं है।

5. हिन्दुस्तानी संगीत शुद्ध स्वरों (pure notes) पर ज़ोर देता है, इसकी अपेक्षा कर्नाटक संगीत गमक पर आधारित कर्नाटक रागों (Gamaka-based Carnatic ragas) पर ज़ोर देता है।

6. हिन्दुस्तानी संगीत में राग प्रस्तुतीकरण (आलापन) को स्वरों (notes) के बीच विस्तृत किया जाता है, बल्कि कर्नाटक संगीत में खंड से खंड तक (phrase to phrase) विस्तृत किया जाता है।

7. हिन्दुस्तानी संगीत के प्रमुख मुखर रूप हैं द्रुपद, खयाल, तराना, ठुमरी, दादरा और ग़ज़ल। जबकि कर्नाटक संगीत में मनोधर्म के कई तरीके होते हैं, जैसे आलापना, निरवल, कल्पनास्वरम और रागम-तानम-पल्लवी।

## फिल्मों के लिए संगीत रचना

एक संगीत निर्देशक को निश्चित रूप से कर्नाटक, हिन्दुस्तानी और पश्चिमी संगीत पर अवगाह होना चाहिए। लेकिन वास्तव में संगीत रचना एक प्राकृतिक वरदान है। संगीत निर्देशक को संस्कृति, साहित्य, महाकाव्यों तथा इतिहास का अवबोध होना चाहिए।

कुछ संगीत निर्देशकों ने कई गीतों की रचना में एक ही राग का उपयोग किया है, जैसाकि मोहनम या शुद्ध धन्यासी। लेकिन, सफलता एक ही राग में समानता के बिना विभिन्न मानसिक भाव पैदा करने की सृजनात्मकता लाने की उनकी क्षमता में निहित है। इस प्रकार संगीत में विविधता लायी जाती है। पिछले वर्षों के कुछ सफल संगीत निर्देशकों ने गीत को आत्मसात करते हुए गीत के प्रत्येक शब्दांश (syllable) के लिए सबसे उपयुक्त स्वर का प्रयोग करके धुन (tune) तैयार किया है, ताकि गीत के सही भाव की अभिव्यक्ति होती है। इस तरह, संगीत तैयार करने की जटिलता प्रकट होने के बिना आम आदमी को सुनने में सुखद होता है। आश्चर्य नहीं है कि इस तरह के गीतों ने हमेशा के लिए आपके दिल में एक राग मारा है।

एक गायक / गायिका सफल हो जाता है / जाती है, यदि वह सही भावों को आत्मसात करने में सक्षम है और संगीत निर्देशक के विचारों को ठीक से अभिव्यक्त करता / करती है। मोहम्मद रफी, लता मंगेशकर, आशा भोसले, किशोर कुमार, के. जे. येशुदास, एस. पी. बालसुब्रमण्यम, पी. सुशीला और कई अन्य प्रतिभाशाली और सफल गायकों में वे सभी गुण होते हैं, जो एक संगीतकार उनसे मांग सकता है। विख्यात संगीत निर्देशक श्री जी. देवराजन ने कहा है वे एक गायक में क्या चाहते हैं, "उसके पास एक अच्छी आवाज़, शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण और विविध भावों की अभिव्यक्ति की क्षमता

होनी चाहिए। कुछ में अन्य गुण हो सकते हैं, लेकिन आवाज़ नहीं। फिर यह एक स्पष्ट बाधा है"।

30 और 40 दशकों के हिन्दी फिल्मों में काफ़ी और खमाज़ रागों का व्यापक तौर पर उपयोग किया गया था क्योंकि ये पौराणिक कथाओं की फिल्मों में गंभीर मानसिक भावों के अनुरूप थे। भैरवी और पहाडी जैसे मधुर-ध्वनि वाले रागों को ज़्यादातर नहीं देखा होगा। 50 और 60 के दशकों में शंकर-जयकिशन और लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल जैसे संगीतकारों के आगमन से इन रागों का उपयोग होने लगा। पहाडी हिन्दी फिल्मी गीतों में शायद सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाला राग है। संगीतज्ञ के. एल. पांडे के अनुसार पहाडी 3,176 गीतों में उपयोग किया गया है, इसके बाद खमाज़ (2,570), नट भैरवी (1,939), कापी (1,752), भैरवी (1,504) और पीलू (889) हैं। उनके अनुसार 'अनुसंधान ने इतने सारे आश्चर्यों को व्यक्त किया। मैं ने कभी नहीं सोचा कि यमन जैसा सब से लोकप्रिय राग में केवल 174 गीत बनाए गए हैं।'

प्रचुर संख्या में फिल्मों वाले मलयालम फिल्म उद्योग में केवल कुछ ऐसे फिल्में हैं, जो गीतों से रहित हैं। इससे यह संकेत मिलता है कि, पुराने ज़माने से ही एक मनोरंजन कला होते हुए सिनेमा ने अपने आकर्षण को समृद्ध कराने के लिए संगीत को ललित कलाओं में से बेहतरीन कला के रूप में अपनाया। संगीत एक फिल्म को सभी के लिए समान रूप से प्रशंसनीय बनाता है।

## कुछ फिल्मी गीतों से गुज़रते हुए मेरा अनुभव

मैं ने वर्ष 1949 से 2018 के बीच 70 वर्षों की अवधि के दौरान रिलीज़ हुई मलयालम, हिन्दी, तमिल और तेलुगू फिल्मों के लगभग 500 गीत 'माइनस' (करोके) ट्रैक में गाए और रिकार्ड किए हैं।

इस संग्रह से यह जानने की खोज की गयी है कि इन गीतों की रचना में कर्नाटक और हिन्दुस्तानी रागों का किस तरीके से उपयोग किया गया है। वास्तव में अधिकांश गीतों में राग के सही रूप का उपयोग नहीं किया गया है। कई संगीत निर्देशक अपने असली शास्त्रीय रूप को छिपाते हुए, राग के "मार्ग" का उपयोग करना पसंद करते हैं, या वे इसी तरह के रागों के साथ मिश्रण करना पसंद करते हैं। मलयालम फिल्म उद्योग के सबसे लोकप्रिय और सफल संगीतकार जी. देवराजन (अपने 35 वर्षों के कार्यकाल के दौरान 350 फिल्मों के लिए संगीत रचना की है) द्वारा एक नए राग का सृजन किया गया है, जैसे आनन्दांबरी, जो आनन्दभैरवी और नीलांबरी का संकर है। फिल्मी गीतों की संगीत रचना में उन्होंने लगभग 90 रागों का उपयोग किया है। मेलकर्ता और जन्य दोनों श्रेणी के कुल 74 रागों का उपयोग करते हुए देखा गया।

यह देखा जा सकता है कि मोहनम सबसे अधिक उपयोग किया गया राग है। इसके बाद आभेरी, कल्याणी, कापी, शुद्ध धन्यासी, सिन्धुभैरवी, मध्यमावती, शिवरंजिनी, दरबारी, कानडा, खरहरप्रिया, यमुना कल्याणी (यमन), देश, हंसध्वनि, मांड, शंकराभरणम, आनन्दभैरवी, बागेश्री, पहाडी, आहिर भैरव, चारुकेशी, हरिकांबोजी, कानडा, बेगडा, चक्रवाकम, नटभैरवी, आभोगी, हंसानन्दम, हिन्दोलम, जोग, कांबोजी, केदार, मलयमारुतन, मिश्रशिवरंजिनी, नीलांबरी, सरस्वती, षण्मुखप्रिया, श्याम कल्याण, श्रीरागम, शुद्ध सावेरी, तिलांग, वलची, वृंदावन सारंगा और अन्य हैं। हिन्दी गीतों के लिए (आंकडा नहीं दिखाया गया) 13 रागों में से केवल पहाडी, किरवानी और भैरवी का अधिकतम इस्तेमाल किया गया है। अन्य राग यमन, कापी, भीमपलासी, यमन कल्याणी, मालकोन, बिहाग, खमाज़, चेनजोटी, मालकोश और शिवरंजिनी थे। तमिल गीतों के लिए (आंकडा नहीं दिखाया गया) अधिकतम उपयोग किया गया राग कापी था, जिसके बाद कीरवानी, तोडी और कल्याणी थे। फिर भी, यह माना जाना चाहिए कि मलयालम की तुलना में, हिन्दी में कम रागों का प्रयोग किया था और तमिल में इससे भी कम। अगले पृष्ठ में दी गई सारणी में मेरे द्वारा पुनः गाए गए मलयालम फिल्मी गीतों में रागों के उपयोग के आंकडों को दर्शाता है।

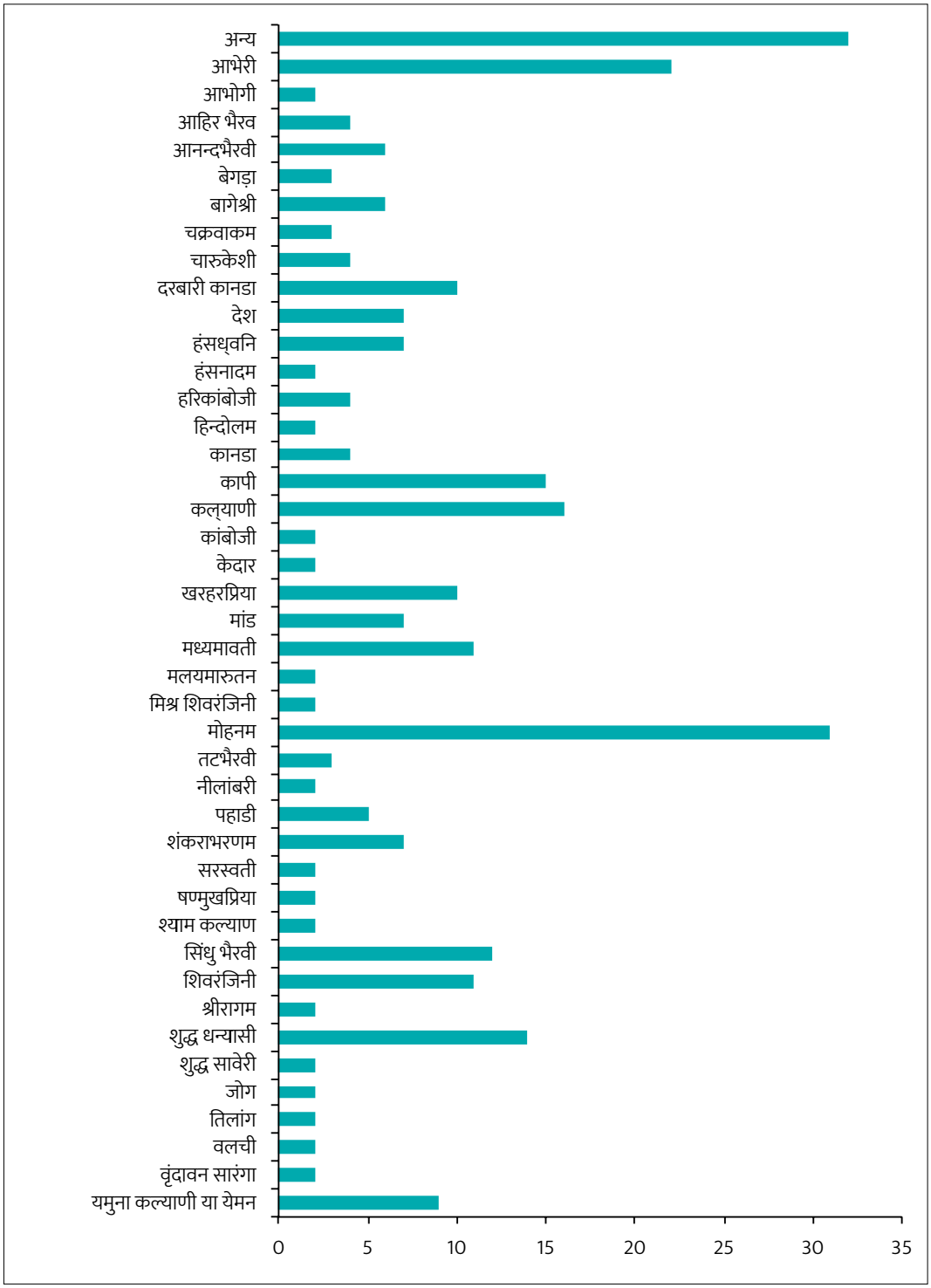


## निष्कर्ष

निष्कर्ष में बताऊँ तो, हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत धाराएं मूल रूप से एक ही स्रोत से विकसित हुई हैं; उन में कुछ समानताएं हैं लेकिन कई अंतर हैं। फिर भी, दोनों संगीत प्रणालियों की आत्मा एक ही है, आध्यात्मिकता। इसलिए संगीत के दोनों रूप एक दूसरे को प्रभावित करते रहेंगे और संगीत प्रणाली के दोनों रूप नए आयामों में विकसित होते रहेंगे। सच्ची सफलता तब मिलती है जब शास्त्रीय संगीत हाथीदांत की मीनारें छोड़ कर जनता तक पहुँचता है।